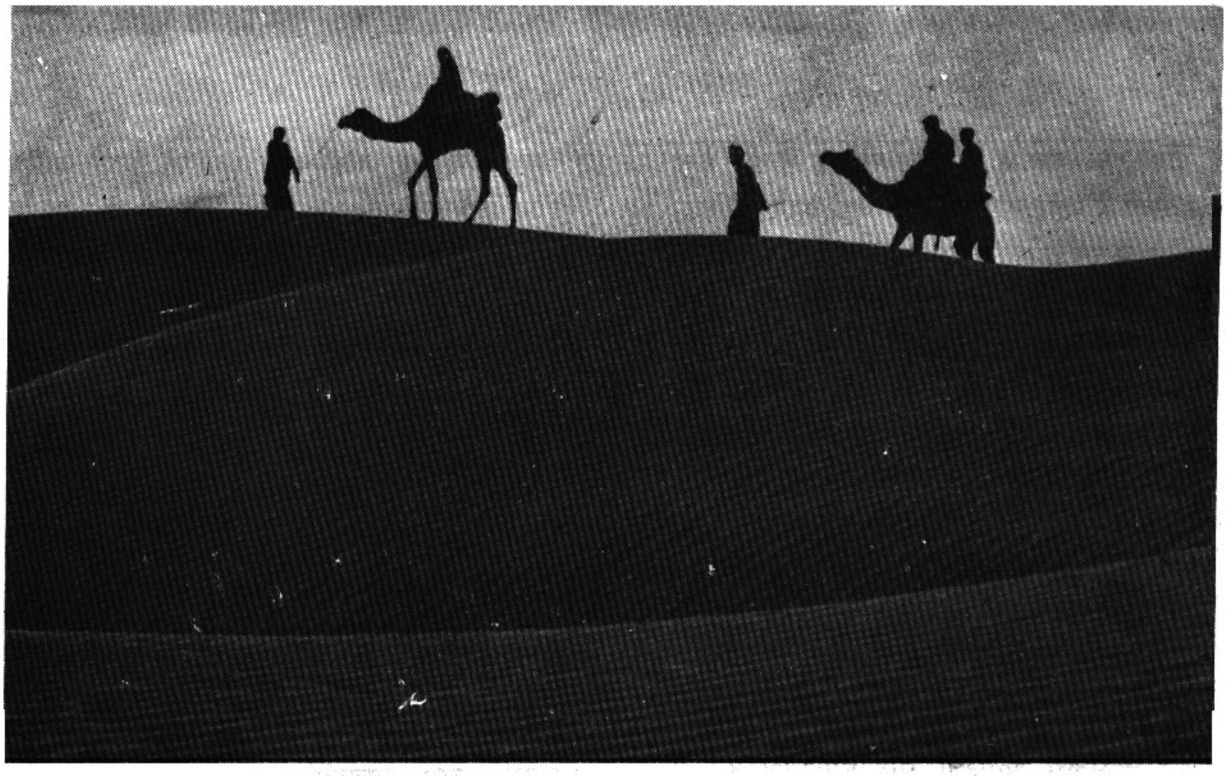

राजस्थान - थार का मरुस्थल

पानी है तो सब कुछ है। और जहां पानी नही है वहां क्या है? आओ अपने देश के उस सब से सूखे हिस्से को देखें जहां बहुत ही कम पानी बरसता है। यह है राजस्थान प्रांत के पश्चिम का मैदानी भाग जो थार मरुस्थल कहलाता है।

भारत के प्राकृतिक प्रदेश के मानचित्र में राजस्थान राज्य और थार मरुस्थल को पहचानो।
राजस्थान के पूर्वी हिस्से की प्राकृतिक बनावट मैदानी है या पहाड़ी या पठारी?
यहां दिए मानचित्र में राजस्थान के बीचों बीच दक्षिण से उत्तर तक फैली हुई, अरावली पहाड़ियां खड़ी हैं।
अरावली की पहाड़ियों से निकलने वाली लूनी नदी को मानचित्र में देखो। लूनी नदी किस सागर में गिरती है?

लूनी नदी राजस्थान के पश्चिमी भाग में बहने वाली एक ही बड़ी नदी है। इसमें भी साल भर पानी नही बहता। लूनी के और पश्चिम में पड़ने वाले इलाके में तो कोई नदी दिखती ही नही है।

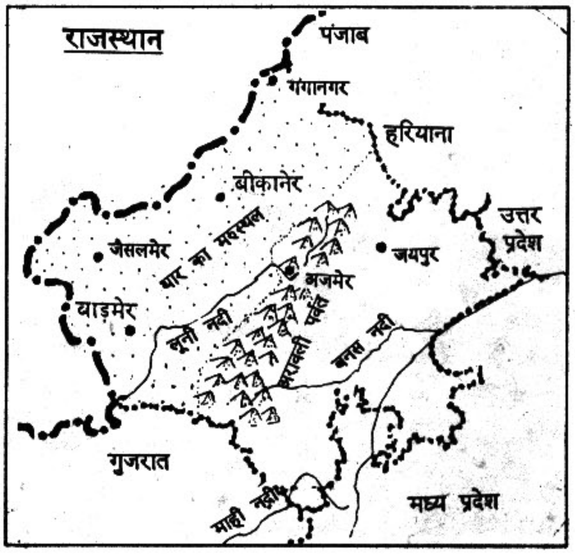

सोचो राजस्थान के बिलकुल पश्चिम में यह कैसा इलाका है जहां कोई नदी तक नहीं बहती। इसका क्या कारण हो सकता है?
अरावली पहाड़ियों के पूर्व मे पड़ने वाले इलाके मे कई नदियां बहती हैं।
इनके नाम क्या हैं - मानचित्र में देख कर बताओ।

वर्षा

भारत में वर्षा का मानचित्र देखो और समझो कि राजस्थान में किस तरह पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर वर्षा कम होती जाती है।

अरावली पहाड़ियो के पूर्व में कितनी वर्षा होती है? अरावली पहाड़ियो और उनके पश्चिम में कितनी वर्षा होती है? सब से पश्चिमी इलाके मे कितनी वर्षा होती है?
तुलना करके देखो कि तुम्हारे इलाके में कितनी वर्षा होती है?

थार के मरुस्थल में बहुत कम वर्षा तो होती ही है, पर कई साल ऐसे भी गुज़र जाते हैं जब एक बूंद पानी नही बरसता।

एक छोटी सी बस्ती

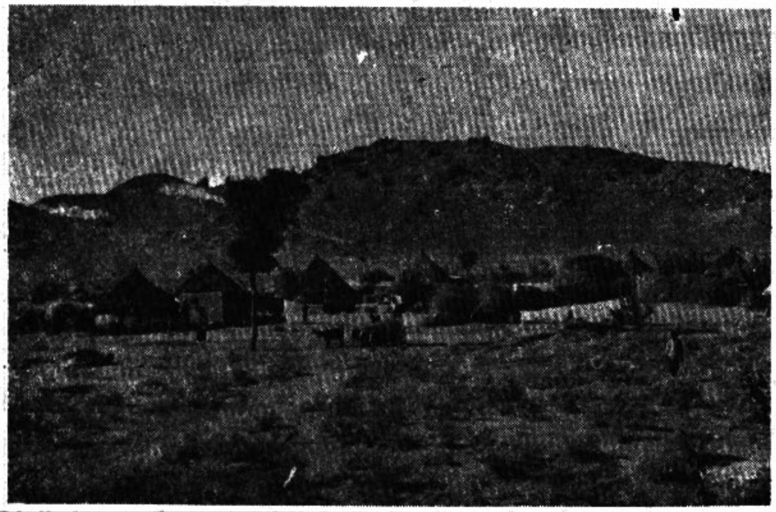

कई वर्षो बाद कभी-कभी एकाएक काफी बारिश हो जाती है तो अचानक सूखे नदी-नालो में बाढ़ आ जाती है। पर जल्दी ही यह पानी सूख जाता है। इतना पानी भी नही होता कि नदी या नाले दूर तक बह सकें। आओ ऐसे सूखे इलाके के जीवन को समझें।

मरुस्थल में लोगों का जीवन

मरुस्थल का मतलब है मृत्यु इलाका - जहां प्यास लोगो, जानवरो और पौधो को मार सकती है। पानी की भयंकर कमी के समय अगर लोग और जानवर यहां से कूच न कर जाएं तो उन्हें मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है। यहां के लोगों का जीवन ऐसे संकट से बचे रहने के उपाय करते हुए बीतता है।

वनस्पति और आबादी

पानी की कमी के कारण ही मरुस्थल में दूर-दूर तक पेड़ नहीं दिखते। कई तरह की छोटी कंटीली झाड़ियां और घास उगती हैं। बस कही-कही इक्के दुक्के खेजड़ी के पेड़ नज़र आ जाते हैं। मरुस्थल के अधिकांश गांव बहुत छोटे हैं, जिनमे 500 से कम लोग रहते हैं। तुम भारत की जनसंख्या के मानचित्र मे देख सकते हो कि मरुस्थल में आबादी कितनी कम है।

भेड़ पालन

यहां गांव के लोग बड़ी संख्या में भेड़ बकरी पालते हैं। पानी की कमी के वक्त घास और कंटीली झाड़ियों के सहारे ही ये जानवर गुज़ारा कर पाते हैं। भेड़ो की ऊन और मांस के लिए भेड़ों व बकरियों की बिक्री अच्छी होती है। दिल्ली, बंबई जैसे बड़े शहरों में मांस की मांग बढ़ती जा रही है। ऊन की कई चीज़ें बनती हैं जो देश-विदेश में बिकती हैं।

रेगिस्तान में चरते भेड़

बरसात के दिन

मरुस्थल में थोड़ी सी बरसात में भी बहुत घास उग आती है। खास कर सेवन घास, जो भेड़ों के लिए अच्छा चारा है। बरसात के दिनों में तो भेड़ों को गांव के आसपास चरा लिया जाता है। इन्ही दिनों बाजरे की खेती का काम भी रहता है।

बरसात में ही पानी जमा करने के लिए कई इंतज़ाम देखने होते हैं क्योंकि साल भर फिर पानी का और कोई साधन नही होता है।

कई घरों में बीच के आंगन में पक्के टांके (टंकी) होते हैं जिनमें बरसात का पानी इकट्ठा हो जाता है। छत से बहने वाले पानी का निकास ऐसा बनाया जाता है कि पानी टांके में ही गिरे। फिर महीनों तक इस पानी को बहुत बचा-बचा के इस्तेमाल किया जाता है। इस पानी से मनुष्य का काम भी चलता है और जानवरों का भी। कई जगह लोग चारपाई पर बैठकर नहाते हैं और चारपाई के नीचे रखे एक बरतन में इस पानी को इकट्ठा कर लेते हैं। यह पानी घर साफ करने व जानवरों को पिलाने के काम में आ जाता

ऊन से बनी कितनी चीज़ों के बारे में तुम जानते हो?

खेती

मरुस्थल के लोगों के लिए भेड़पालन का धंधा महत्वपूर्ण है। यहां पानी की कमी के कारण खेती बहुत कम होती है। साल में किसी तरह एक फसल हो जाए तो बहुत समझो। गांव के लोग बरसात में बाजरा बोते हैं। बाजरा यहां की रेतीली मिट्टी और कम पानी में भी उग जाता है। जुलाई में बाजरा बोया और अक्टूबर में काट लिया।

इसके बाद अगली बरसात तक खेत सूने पड़े रहते हैं। बाजरे की थोड़ी सी फसल से साल भर का काम तो नही चल पाता। इसलिए भेड़पालन का धंधा बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन, भेड़पालन का धंधा भी मरुस्थल में रह कर नही किया जा सकता।

यहां इतनी हरियाली कहां कि बड़ी संख्या मे भेड़ बकरियां चराई जा सकें? इस स्थिति में मरुस्थल के लोग साल भर अपना काम कैसे चलाते हैं? उनकी बरसातें, गर्मियां और सर्दियां कैसे कटती हैं - यह हम आगे पढ़ेंगे।

बाजरे का खेत

है। यहां लोग सूखी रेत से ही बर्तन मांज लेते हैं। रेत की रगड़ से पीतल के बर्तन को खूब चमका भी देते हैं।

रेतीले मैदान में यहां-वहां पाए जाने वाले गड्ढों या तालाबों में भी बरसात का पानी इकट्ठा होता है। इन छोटे तालाबों का पानी धीरे-धीरे चारों तरफ रिसता रहता है। यह रिसता हुआ पानी बेकार न चला जाए, इसके लिए लोग तालाब के चारों तरफ 25-30 फीट गहरी कुंइयां या बेरियां खोदते हैं। तालाब से रिसता पानी इन कुंइयों में इकट्ठा होता रहता है। जब महीनों बाद तालाब का पानी खत्म हो जाता है तब भी लोगों को अपनी कुंइयों में पानी मिल जाता है।

मीलों दूर जाकर गधों की पीठ पर पानी के घड़े लादकर लाते है

जहां तालाब व गड्ढे नहीं होते हैं, वहां लोग खुद आसपास की ढाल को देखते हुए ज़मीन खोदकर पक्की कुंइयां और कुंड बनाते हैं ताकि चारों तरफ गिरा बरसात का पानी इनमें इकट्ठा होता जाए। बरसात के पानी को इकट्ठा करके रखने के ये इंतज़ाम बहुत ज़रूरी हैं क्योंकि मरुस्थल में भू-जल बहुत नीचे मिलता है। कुंओं में बहुत नीचे व बहुत कम पानी मिलता है। कई कुंओं का पानी खारा होता है।

सारे इंतज़ामों के बावजूद, कई गांवों में लोगों को मीलों चल कर पानी लाना पड़ता है। कहीं औरतें मीलों तक सिर पर घड़े उठाए चलती हैं, तो कही ऊंट और गधों पर घड़े लादके लाए जाते हैं।

मरुस्थल में पानी के लिए जो इंतज़ाम किए जाते हैं वे क्या तुम्हारे यहां भी किए जाते हैं? कारण समझाओ।

सर्दियां

अक्टूबर में बाजरा कट जाता है। तब खेतों में बाजरे के डंठल खड़े होते हैं और भेड़ो को चराने के काम आते हैं। इन दिनों भेड़ों पर अच्छी मात्रा में ऊन होता है। क्योंकि उन्हें बरसात में चारा ठीक से मिला था (सिर्फ उन सालों में जब बारिश हुई हो, कई साल तो बारिश ही नही होती)।

गांव के सारे परिवार अपनी-अपनी भेड़ों का ऊन काटते हैं। काटने से पहले भेड़ों को धो कर साफ भी कर लेते हैं। ऊन में फंसे कांटे भी निकाल लेते हैं। ऐसे साफ ऊन की कीमत ज़्यादा मिलती है। व्यापारी गांव आ कर ऊन खरीद ले जाते हैं।

गांव से दूर जाने की तैयारी

बाजरी कट चुकी है। भेड़ो से ऊन भी उतर चुका है। अब सर्दियों के दिन आ ही गए हैं। गांव के आसपास बरसात में उगी घास भेड़ें चर चुकी हैं और खेतों में खड़े डंठल भी। अब गांव में रह कर चारा नही मिलेगा। सर्दियो और गर्मियो भर जानवरों को क्या खिलाएंगे - यह सवाल सब के सामने खड़ा हो जाता है। लोग चारे की तलाश में दूर-दूर तक जाने की तैयारी करने लगते हैं।

मरुस्थल के भेड़ पालक हर साल जाते हैं और कई सालों से जाते रहे हैं।

इसलिए अब इनके बंधे-बंधाए रास्ते हैं, जहां चारा मिलने का पूरा भरोसा रहता है। यहां दिए नक्शे में

भेड़पालकों की यात्रा का मार्ग

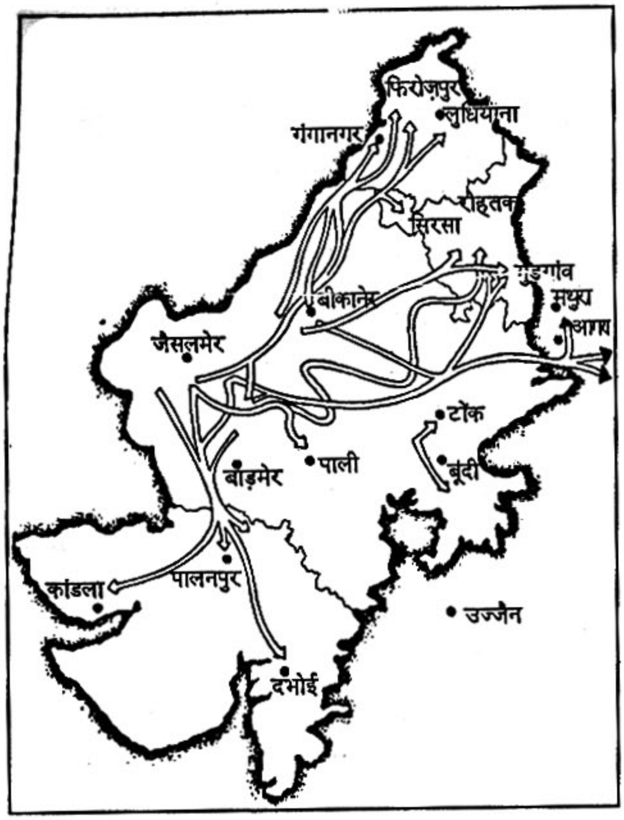

राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब राज्य दिखाए गए हैं। राजस्थान के जैसलमेर और बीकानेर के मरुस्थली क्षेत्रों से भेड़पालक कहां-कहां जाते हैं, यह तीरों से दिखाया गया है।

तुम नक्शा देख कर बताओ कि भेड़पालक चारे की तलाश में किन दिशाओं में जाते हैं? यहां उनकी भेड़ों के लिए चारा मिलने का क्या कारण है?

टोंक और बूंदी पूर्वी राजस्थान में हैं। यह इलाका मरुस्थल से कैसे अलग है?

नक्शे में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र पहचानो। यह इलाका मरुस्थल से कैसे अलग है?

भेड़पालकों के साथ यात्रा

चलो, भेड़पालकों के एक झुंड के साथ हो लें व देखें कि उनके सफर में क्या-क्या होता है. .....

जैसलमेर के दो गांवों से 50 भेड़पालक 6,000 भेड़ों और 20-22 ऊंटों के साथ निकले हैं। दोनों गांवों के लगभग सभी घरों से एक-एक दो-दो लोग अपनी-अपनी भेड़ और ऊंट ले के चले हैं। किसी परिवार के पास 70-80 भेड़ हैं। किसी के पास 100-200 भेड़ हैं और कुछ के पास 300 भेड़ भी हैं। गांव में जिन परिवारों के पास 40-50 भेड़ तक हैं - वे इस साल बाहर नहीं जा रहे हैं। वे आसपास थोड़ी दूर तक घूम कर अपनी भेड़ चरा लेंगे।

गांव में औरतें, बच्चे और बूढ़े रह गए हैं। हां, कुछ भेड़पालकों के साथ उनकी औरतें और बच्चे भी चल रहे हैं। ऊंटों पर सामान लाद दिया गया है और लोग अपने लंबे सफर पर चल पड़े हैं।

पूर्व दिशा में अधिक वर्षा वाले इलाके हैं। भेड़ों को रास्ते में पड़ने वाले बाजरे के कटे खेतों पर चराते हुए लोग जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, तो खेजड़ी और बबूल के पेड़ ज़्यादा संख्या में दिखाई देने लगते हैं। इन पेड़ों की पत्तियां और फलियां भेड़ों के लिए बहुत अच्छा चारा हैं। हमारे भेड़पालक साथी इन पेड़ों की टहनियां काट-काट कर अपनी भेड़ों को खिला रहे

चले पूरब की ओर।

हैं। पूर्वी इलाकों में कुछ अधिक वर्षा के कारण ज़्यादा ज़मीन पर खेती होती है, इसलिए खेतों में खड़े डंठल भी ज़्यादा मिल रहे हैं।

भेड़ों की देखभाल

हमारे भेड़ पालक साथी रास्ते भर कई चिंताओं से जूझते हैं। महीने भर से चलते-चलते उनकी भेड़ें थक रही हैं। रास्ते में कई बार चारा ठीक से नही मिला। ठंड भी बहुत तेज़ है। भेड़ें बीमार पड़ रही हैं। कई लोग उधार लेने की सोच रहे हैं। रास्ते में पड़ने वाले छोटे शहर में ऊन का व्यापारी रहता है। वह पहचान का आदमी है। लोग उससे पैसे उधार लेते हैं। बाज़ार से बाजरे का आटा, गुड़ और तेल खरीदते हैं। इन चीज़ों को मिलाकर रोज़ भेड़ों को खिलाएंगे। बाज़ार से दवाई भी खरीदनी पड़ रही है।

दिन भर चलते-चलते जब शाम हो जाती है तो कहीं खेत में, या खुले में डेरा डाल दिया जाता है। ऊंटो से सामान उतारा जाता है और पट खाना पकाने की तैयारी शुरू होती है। बाजरे की रोटी और दाल बनाई जाती है और मिर्ची-प्याज़ के साथ खाई जाती है। सुबह उठकर भेड़ के दूध की चाय पीकर एक बार फिर बाजरे की रोटी बनाई जाती है। और यह मिर्च व प्याज़ के साथ खाई जाती है। तब लोग सामान बांध कर दिन भर के सफर के लिए निकल पड़ते हैं।

भेड़ों की हालत नाज़ुक होने से पहले ही उनके लिए खुराक और दवा का इंतज़ाम न किया तो नुक्सान बहुत होता है। जानवर रास्ते में मरने लगते हैं। बीमार जानवरों को भी लंबे रास्ते भर हांक के ले जाना मुश्किल होता है। इसलिए, अक्सर बीमार जानवर को रास्ते में ही बेच दिया जाता है। बीमार जानवर की बिक्री की बहुत अच्छी कीमत तो नही मिलती, पर फिर भी कुछ रकम तो वसूल हो ही जाती है। इस रकम से बाकी भेड़ों के लिए खुराक व दवाएं खरीदने में मदद मिलती है।

अरावली पहाड़ियों के पास

चलते-चलते दो मीहने बीत गए। लो, अब पूर्व में अरावली की पहाड़ियां दिखने लगी हैं।

यहां कितनी वर्षा हो जाती है - वर्षा का मानचित्र देख कर बताओ।

अरावली के आसपास के इस इलाके में कई किसान ट्यूब-वेल से सिंचाई करने लगे हैं। वे सर्दियों में गेंहू और चने की फसल लेने लगे हैं। ऐसे सिंचित खेतों में भेड़ चराना संभव नही है। वे असिंचित खाली खेतों में ही जानवर बिठा सकते हैं। खेतों के मालिक खेत में उगे पेड़ों की पत्तियां जानवरों को खिलाने देते हैं। कई बार, वे भेड़ पालकों को कुछ पैसे भी देते हैं।

क्या तुम्हारे यहां किसान खेतों में भेड़ें बिठाते हैं? अगर हां, तो

अरावली पहाड़ के तले चरते भेड़

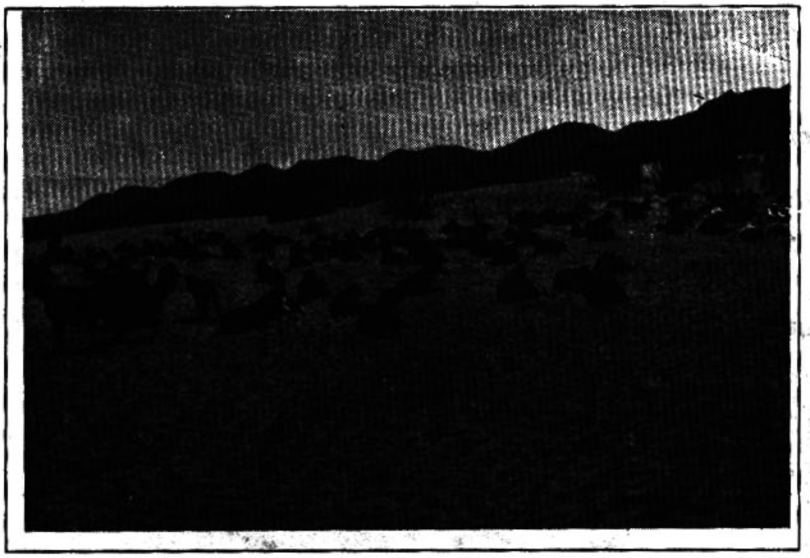

क्यों? खेत में भेड़ बिठाने के बदले में भेड़ पालकों को क्या दिया जाता है?

सर्दियों के महीने इसी तरह मुश्किल से कटते हैं। 4-5 महीनों में भेड़ों पर फिर ऊन हो गया है। घर से दूर, यात्रा के बीच, भेड़ों को साफ करने और खुद उनका ऊन काटने का साधन भी नहीं है और समय भी नहीं है। इसलिए डेरे पर पास के शहर या गांव से ऊन काटने वालों को बुला कर उन्हें पैसे देकर ऊन कटवाई गई। ये लोग एक भेड़ की ऊन काटने का 50 पैसे से 1 रुपया तक लेते हैं।

ऊन काटना

ऊन व्यापारी की दुकान रास्ते में पड़ने वाले सभी कस्बों-शहरों में है। व्यापारी खुद डेरे पर आकर लोगों से संपर्क साध लेते हैं और ऊन खरीद ले जाते हैं। सर्दियों के अंत में काटी गई यह ऊन, मात्रा में कम है और साफ भी नही है। ऊन की मात्रा कम है क्योंकि सर्दियों भर भेड़ों को अच्छे से चरने को नही मिला है। इसलिए इस ऊन से ज़्यादा आमदनी नही मिलती।

ऊन बेच कर जो पैसे मिले हैं उससे हमारे भेड़पालक साथियों ने व्यापारी का उधार चुकाया है क्योंकि सर्दियों के शुरू में उसी से खुराक और दवाई के लिए पैसे उधार लिए थे। बची हुई रकम गांव भेजी है। गांव में परिवार के लोगों के पास अनाज खत्म हो रहा होगा और वहां गुज़ारा करना मुश्किल हो रहा होगा। इसलिए उन्हें पैसे भेजना ज़रूरी है।

गांव के परिवार वालों को अनाज की कमी का सामना क्यों करना पड़ रहा होगा? समझाओ।

<u>गर्मियां</u>

मार्च-अप्रैल का महीना आया। अब लोग हरियाणा की ओर चल दिए हैं। हरियाणा में नदी से निकली नहरों से सिंचाई होती है। रबी में लगभग सभी खेतों में गेहू है और मार्च में कटता है। अब सभी खेतों में गेहूं के भरपूर डंठल खड़े मिलेंगे। इनमें भेंड़े जी भर के चरेंगी।

हरियाणा में चारो तरफ देशी बबूल भी बहुत उगता है। इसकी पत्तियां और फलियां भेड़ो के लिए अच्छा भोजन हैं। हां, यह ध्यान रखना पड़ता है कि भेड़ विलायती बबूल की फलियां न खा लें - ये भेड़ों के लिए ज़हरीली होती है। अप्रैल मई जून भर हरियाणा के खेतों मे चरने को मिलता है।

<u>वापसी यात्रा</u>

गर्मियां निकल गईं। अब बरसात के दिन आने वाले हैं। हरियाणा के खेतों में भी हल चलेंगे। बोनी की तैयारियां होंगी। यहां अब भेड़ो को चराना संभव नही होगा। हमारे भेड़पालक साथियों को भी मरुस्थल के

अपने गांव लौटना है। वहां बरसात में घास उग आएगी।

इसलिए जून-जुलाई में वापसी का रास्ता पकड़ लिया जाता है। गर्मियों में वापसी की लंबी यात्रा भी कठिनाई भरी होती है। रास्ते में सभी खेतों पर बरसात की वोनी की तैयारियां हो रही होती हैं। सिर्फ सड़क किनारे उगी घास व पेड़ों की पत्तियों से ही भेड़ों को पेट भरना पड़ता है। जब तक गांव लौटेंगे, तब तक बारिश हो जाएगी तो चारा मिलेगा - इस उम्मीद में वापसी यात्रा पूरी होती है। इस तरह हमारे भेड़ पालक साथी साल दर साल अपना जीवन बिताते हैं। ऐसे में अगर गांव लौटे और बरसात के महीने सूखे बीत जाएं तो?

क्या तुम सोच के बता सकते हो कि ये लोग क्या करेंगे?

सूखा

1987 में यही संकट आ घिरा। घर लौटे और एक बूंद पानी नहीं बरसा, न घास उगी, न बाजरा। झाड़ियों की थोड़ी बहुत पत्तियां कुछ दिनों में चर के खा ली गईं। अब कहां जाएं? यह सवाल था। पूरे पश्चिम राजस्थान में सूखा था। हरियाणा वापस तो नही जा सकते थे - वहां तो खेतों में फसल खड़ी थी। गांवों पर ही रहें - तो जानवरों को मरने से बचाएं कैसे? जानवर भी मर जाएं तो खुद का गुज़ारा किस के सहारे करें? खेती तो पहले ही साथ छोड़ चुकी थी।

जानते हो इस हालत में मरुस्थल के सैकड़ो भेड़ पालकों ने क्या किया? पैसे उधार लिए - ट्रक किराए पर लिए और ट्रकों में अपनी भेड़ें लाद के मध्य प्रदेश के जंगलो की ओर रवाना हुए। भेड़ों को हांक के लाते तो रास्ते भर उन्हें चरने को नही मिलता और भेड़े दम तोड़ देती। इसीलिए ट्रक पे चढ़ा के लाना पड़ा। जंगल में चराना ज़रूरी हो गया क्योंकि उस समय खेतों में चराया नहीं जा सकता था।

जंगल में हज़ारों की संख्या में भेड़ें चरने आ गईं। वन विभाग ने इस पर रोक लगाने की कोशिश की और भेड़ पालकों को बहुत जुर्माना देना पड़ा। वे पहले ही परेशान थे, अब सरकारी रोक-टोक के

रेत के टीले

मरुस्थल में जगह-जगह रेत के बड़े-बड़े टीले हैं। तेज़ हवाओं के साथ टीलों की रेत उड़कर आगे चली जाती है और इस तरह दूसरी जगह टीला बन जाता है। गर्मियों के बिलकुल सूखे महीनों मे रेत की आंधियां चलती हैं। घर के बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है।

जैसलमेर, बीकानेर, गंगानगर में जगह-जगह रेत के टीले देखे जा सकते हैं। गंगानगर की सिंचित खेती में रेत के टीलों और आंधियों ने बहुत कठिनाई पैदा की है। सिंचाई की नालियां बार-बार रेत से बंद हो जाती है। खेत में बोई गई फसल पर रेत जम जाती हैं और छोटे पौधे दब जाते हैं। खेत में कई बार बखरना और बोना पड़ता है। बीच-बीच में नालों से, पौधो से रेत हटानी पड़ती है।

खिसकते हुए रेत के टीलों पर घास व झाड़ियां भी नहीं उग पाती। इसलिए ये चराई के काम भी नहीं आते। टीलो पर झाड़ियां लगाकर उन्हें स्थाई बनाने की कोशिश की जा रही है, ताकि उनसे रेत न उड़े और उन पर उगी झाड़ियों से जलाऊ लकड़ी और जानवरों का चारा मिलने लगे।

इस तरह हम समझ सकते हैं कि सूखे इलाकों के लोगों के जीवन की कई कठिन समस्याएं हैं और उनका निदान भी आसान नहीं है।

कारण और परेशान हुए।

जंगल में बड़ी संख्या में भेड़ों को चरने देने के लिए ऐसी कोई व्यवस्था करनी होगी ताकि जंगल को नुकसान न हो। यह इसलिए भी ज़रूरी हो गया है क्योंकि आज राजस्थान के सैकड़ों भेड़पालक 15-20 लाख भेड़ों को लेकर अपने गांव पूरी तरह छोड़ चुके हैं। वे अब बरसात में भी वापस नही जाते क्योंकि कई सालों से सूखा पड़ रहा है। वे पूर्वी राजस्थान और मध्य प्रदेश के जंगलों और मध्य प्रदेश के खेतों के बीच घूमते रहते हैं।

भेड़पालकों के साथ अपनी यात्रा हम यही समाप्त करें। यात्रा उनके जीवन का नियम है। वे जहां रहते है, वहां के हालात उन्हें एक जगह बस कर नही रहने देते। इसीलिए उनका जीवन तुम्हारे यहा के लोगों के जीवन से इतना फर्क है।

सूखे में हरियाली लाने की कोशिश

मरुस्थल में सिंचाई

पश्चिमी राजस्थान में नदियां नही हैं। पर ठीक इसके उत्तर में पंजाब राज्य है। वहां सतलज, ब्यास, रावी नदियों में साल भर काफी पानी रहता है। 1958 में सतलज नदी से 649 किलोमीटर लंबी नहर निकाल के राजस्थान के मरूस्थल में पानी पहुंचाने की एक योजना शुरू हुई। यह राजस्थान नहर परियोजना है। इससे मरुस्थल के उत्तरी हिस्सों में सिंचाई होने लगी है। खासकर गंगानगर ज़िले में। यहां बिलकुल सूखे, रेतीले इलाके में साल भर नहर का पानी बहता है। इससे गंगानगर के सिंचित इलाकों का हुलिया ही बदल गया है।

यहां बाजरे की एक फसल की जगह साल में दो फसलें ली जाती हैं। गेहू, चना, कपास, ग्वार, गन्ना, मूंगफली जीरा, धनिया, मिर्च - कितनी फसलें ली जाने लगी हैं बीच रेगिस्तान में।

ऊंट

रेगिस्तान का जहाज है ऊंट, यह तुमने ज़रूर पढ़ा होगा। कुछ लोग यह सोचते हैं कि ऊंट की कूबड़ में पानी भरा रहता है इसलिए ऊंट कई दिनों तक बिना पानी पीए रह लेता है। दरअसल ऊंट की कूबड़ में चर्बी जमा रहती है। जब ऊंट को अच्छा चारा मिलता है तब उसकी कूबड़ में चर्बी चढ़ जाती है। जब कड़की का समय आता है तो ऊंट इसी चर्बी को खर्च करता रहता है और दुबला हो जाता है। हमारे साथ भी यही बात होती है। यह ज़रूर है कि चर्बी में हाईड्रोजन के कण है जो सांस में ली गई ऑक्सीजन के साथ मिलकर पानी बन जाते हैं। ऊंट के गद्दीदार पैर भी रेत में धंसते नहीं हैं और रेत पर तेज़ी से चल पाते हैं। अच्छे ऊंट एक घंटे में 16 किलोमीटर तक चल लेते हैं।

गंगानगर में पहले आबादी बहुत कम थी। नहर आने के बाद सरकार ने पंजाब-हरियाणा के कई किसानों को गंगानगर में बसाया। ये किसान सघन खेती करने में अनुभवी थे। राजस्थान के भी कई किसानों ने सिंचित सघन खेती अपनाई। सालभर सिंचित खेती के होने से, पशुपालन में कठिनाइयां आने लगी। हल व ट्रेक्टर से, सेवन घास उखाड़ दी गई। चारो ओर साल भर खेतों में फसल खड़ी रहती है, तो जानवर चराना मुश्किल हो गया। कई लोगो ने जानवर बेच डाले।

सिंचित खेती के कुछ ही सालों में एक गंभीर समस्या खड़ी होने लगी। रेतीली ज़मीन में पानी देने से ज़मीन के नीचे पानी का स्तर ऊंचा होने लगा। यह इसलिए हुआ क्योंकि ज़मीन से सिर्फ 5 से 20 फीट की गहराई पर खड़िया मिट्टी की कड़ी परत थी। इस परत के ऊपर ही ऊपर नहरों से रिसा पानी इकट्ठा होने

लगा, और भूजल का स्तर उठने लगा। लगभग 500 वर्ग किलोमीटर का इलाका दलदल बन जाने की स्थिति में है और ज़मीन भी खारी होती जा रही है। इससे सिंचित खेती को बहुत खतरा है।

कई लोगों का सुझाव है कि मरुस्थल में सिंचाई से खेती को बढ़ाने की अपेक्षा पशुपालन को ही बढ़ाना चाहिए। सिंचाई के पानी से घास, झाड़ियां आदि उगानी चाहिए। इससे दलदल की समस्या कम होगी और लोगों की जीविका का पुराना तरीका - पशुपालन - प्रगति करेगा। सरकार ने घोषणा भी की है कि अब मरुस्थल में नहर से चारागाहों का विकास करने पर ज़ोर दिया जाएगा।

नहर के आने से रेगिस्तानी इलाके में जो बदलाव आए, उनकी तीन मुख्य बातें बताओ।

o o o o

अभ्यास के प्रश्न

1. पानी की कमी का मरूस्थल के लोगों के जीवन पर क्या-क्या असर पड़ता है - समझाओ।
2. भेड़ों को बरसातों में, सर्दियों और गर्मियों में चारा कहां-कहां से मिलता है?
3. राजस्थान के पूर्वी और पश्चिमी इलाकों में नदी-नाले, वनस्पति, खेती आदि में क्या-क्या अंतर हैं?
4. मरुस्थल के लोग भूजल की बजाए बरसात के पानी पर ज़्यादा निर्भर करते हैं, क्यों?
5. भेड़ों की ऊन कब-कब काटी जाती है? ऊन बेचने का क्या तरीका है?
6. भेड़पालकों को उधार लेने की ज़रूरत क्यों पड़ती है?
7. 1987 में जब सूखा पड़ा तो मध्यप्रदेश के जंगल में भेड़ें चराना बहुत ज़रूरी क्यों हो गया? सूखे के समय भेड़ चराने में भेड़पालकों को किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है?
8. राजस्थान के मरुस्थल में हरियाली लाने की क्या कोशिश की गई है?
9. रेगिस्तान में खेती का विकास करने में क्या-क्या कठिनाइयां सामने आ रही हैं?